इस बात की शुभकामना प्रकट की जाती है, कि 'नया साल आपके लिए शुभ, मंगलमय एवं लाभकारी हो।'

सजाने के माध्यम

चित्र पट्टिका (stencil) –

'स्टेन्सिल' सजावट का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। जब किसी लेख या डिजाइन को बार-बार छापने की आवश्यकता पड़ती है, तो स्टेन्सिल का प्रयोग करते हैं। इसके द्वारा थोड़े समय में अधिक स्थानों पर एक जैसे चित्र बनाये जा सकते हैं।

भारतीय कला और संस्कृति का परस्पर संबंध –

कला मानव संस्कृति की उपज है। इसका उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। इस भावना की वृत्ति व मानसिक विकास के लिए

ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है। कलाकार भी अपने अव्यक्त भावों को विभिन्न माध्यमों से व्यक्त करता है। "सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु ही कला है।"

आधुनिक कला एवं लोक कला — इसमें कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती है —

(1) कुछ कलाकृतियाँ प्रकृति के बाह्य संसार की अनुकरणीय प्रवृत्ति को बताती है। इन पर यथार्थवाद एवं प्रकृतिवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

(2) कुछ कलाकृतियों पर अध्यात्मवाद एवं भविष्यवाद का प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

(3) कुछ कलाकृतियाँ कलाकार की अनुभूतियों और व्यक्तिगत संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती है।

(4) कुछ कलाकृतियाँ कलाकार के विशिष्ट कौशल को प्रदर्शित करती हैं जिनमें उनको विविध कलात्मक सामग्री के गुणों और उनके प्रयोगों की समझ परिलक्षित होती है।

लोक कला — आदिकालीन व्यक्तियों की कला का विकसित रूप है, यह प्रकृतिवादी शैली में प्रगत हुई जिसमें बहुमुखी भावनाएँ विद्यमान हैं। लोक कलाकार अपनी भावनाओं को किसी वस्तु के माध्यम से दर्शाते हैं और भावनाओं तथा वस्तु में समानता इतना अधिक होता है कि रचनाकार अपने व्यक्तित्व और वस्तु में अंतर करने में असमर्थ रहता है। भारतवर्ष में लोक कलाएँ अत्यन्त समृद्ध हैं। राजपूत शैली, राजस्थानी शैली, मेवाड़ शैली, कांगड़ा शैली, मुगलकालीन शैली आदि ~~कला~~ कलाएँ कला जगत पर अपनी विशिष्ट छाप रखती हैं।